

कालिकेय पुं. (तत्.) एक असुर का नाम।

कालिख स्त्री. (तद्.) कालिमा, काला मैल।

कालिज पुं. (अं.) कॉलेज, महाविद्यालय।

कालिमा स्त्री. (तत्.) कालापन या कालिख, अँधेरा
लाक्ष. दोष, कलंक।

कालिय दमन पुं. (तत्.) कालियनाग का दमन
करने वाला, कृष्ण।

कालियमर्दन पुं. (तत्.) दे. कालियदमन।

काली वि. (देश.) काले रंग वाली।

काली करतूत स्त्री. (देश.) ऐसा काम जिसमें लांछन
लगे, शर्मनाक करतूत।

काली छाया स्त्री. (तद्.+तत्.) अशुभ होने का
संदेह मुहा. काली छाया मँडराना।

काली जबान स्त्री. (तद्.+फा.) ऐसी जिह्वा जिससे
निकली बात अशुभ हो।

काली मिट्टी स्त्री. (तद्.) एक प्रकार की चिकनी
मिट्टी जो काले रंग की होती है और लीपने-
पोतने के काम आती है।

काली मिर्च स्त्री. (देश.) काले रंग का गोल और
छोटाफल जिसका स्वाद कड़वा होता है तथा
औषधीय गुण वाला होता है, यह भारत के
अतिरिक्त सिंगापुर, मलाया, दक्षिणी द्वीपसमूह
आदि में होता है।

काली सूची स्त्री. (तद्.+तत्.) ऐसी सूची/नामावली
जिसमें अनुपयोगी व्यक्तियों, देशों आदि के नाम
उल्लिखित हों।

काली हरड़ स्त्री. (देश.) छोटी हरड़ (काली छोटी
हरड़ पाचन क्रिया को ठीक करने के लिए
उपयोगी औषधि मानी गई है)।

कालीन पुं. (तुर्की.) मोटा, ऊनी गलीचा, जिसे फर्श
पर बिछाया जाता है।

कालीय वि. (तत्.) काल से संबंधित।

कालुष्य पुं. (तत्.) कालापन, बुराई लाक्ष.अर्थ दोष,
लांछन।

कालेश पुं. (तत्.) काल का स्वामी, सूर्य, शिव।

कालोंच/कालोंछ पुं. (देश.) कालुष्य, कालापन, दोष
लाक्ष. कलंक।

कालोनी स्त्री. (अं.) लोगों के रहने के भवन वाली
बस्ती, उपनगरी।

काल्पनिक वि. (अं.) कल्पना से बनाया गया, कहा
गया, जो वास्तविक न हो, स्वयं गढ़ी गई बात।

काल्य वि. (तत्.) 1. काल या अवसर के अनुसार
2. प्रातःकाल का समय या कृत्य।

काल्ह/काल्हि क्रि.वि. (तद्.) आने वाला कल, बीता
हुआ कल।

कावड़िया/काँवरिया पुं. (देश.) काँवर लेकर तीर्थयात्रा
करने वाला व्यक्ति।

कावा पुं. (अर.-काब:) 1. मक्के की एक इमारत,
जिसे मुसलमान ईश्वर का घर समझते हैं 2.
चक्कर, चौकोर।

काव्य पुं. (तत्.) 1. कविता करने का काम,
कविकर्म, 2. कविता के नियमों अथवा छंद
शास्त्रानुकूल रचित रचना।

काव्य चोर पुं. (तद्.) किसी दूसरे कवि की कविता
की चोरी करने वाला।

काव्य-दोष पुं. (तत्.) किसी कविता या काव्य के
सौंदर्य/रस की हानि करने वाले तत्त्व, काव्यग्रंथों
में कविता के तीन दोषों का उल्लेख मिलता है-
शब्द दोष, अर्थदोष, रसदोष।

काव्यन्याय पुं. (तत्.) काव्य. काव्य के लिए
उपयुक्त न्याय।

काव्य प्रयोजन पुं. (तत्.) काव्य या काव्य-रचना
का उद्देश्य, (काव्य समीक्षकों ने काव्य के पाँच
मुख्य उद्देश्य बताए हैं, यश की प्राप्ति, धन का
लाभ, व्यावहारिक ज्ञान, अमंगल का अपहार और
अलौकिक आनंद की प्राप्ति।

काव्यलिंग पुं. (तत्.) एक प्रकार का अर्थालंकार,
इस अर्थालंकार में पद के द्वारा किसी कथन का
कारण बताए जाने का चमत्कार होता है।